ISSN - 2[illegible]929

अक्षर वाङ्मय

४ मार्च २०२०

नारी विमर्श

विशेषांक

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
ID. No.
PU/AN/A/
58/1999

आर.एन्.आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र.नं.- MAHMAR-36829-2010

ISSN : 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

०४ मार्च २०२०

: संपादक :

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

: कार्यकारी संपादक :

डॉ. भास्कर ताम्हनकर

: संपादक मंडळ :

डॉ. शशिकांत श्रंगारे

डॉ. बलवंत जेऊरकर **कु. रुपाली वाडेकर**

डॉ. अलका निकम

: मार्गदर्शक :

श्री. सागर फडके

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन, 'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर-४१३५१५.

मुद्रक : कल्पना मल्टीटेक, ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे-३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ.नानासाहेब सूर्यवंशी, 'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, जि.लातूर-४१३५१५, भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१,
ई-मेल : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

अक्षर जुळणी : शिवाजी ज्ञा. पांचाळ, लातूर, भ्रमणध्वनी : ९७६६२४०१२६,
ई-मेल : shivajipanchal8@gmail.com

स्वागत मूल्य : रू.१,०००/-

अक्षर वाङ्मय में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त मत एवं लेखकों के विचारों से प्रकाशक, संपादक और संपादक मंडल सहमत हो ऐसा नही ।

UGC CARE Listed Journal

Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

ISSN : 2229-4929

— अनुक्रम —

(हिन्दी विभाग)

अ.क्र.	पेपर का विषय	लेखक का नाम	पेज क्र.
01.	हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श	डॉ. माया सगरे	002
02.	हिंदी उपन्यास में नारी विमर्श : प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता' के संदर्भ में	डॉ. जेनेट फिलिप बोर्जिस	006
03.	हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	सुषमा प्रफुल नामे	010
04.	इक्कीसवी सदी के महिला लेखिकाओं के उपन्यास : नारी संवेदना एवं नारी विमर्श।	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	016
05.	'सलाम आखिरी' उपन्यास में यौनकर्मी-जीवन	श्रीकांत राठोड	022
06.	रघुवीर सहाय के काव्य में स्त्री विमर्श	डॉ. विठ्ठल शंकर नाईक	026
07.	बराबर की मनुष्यता की बुलंद आवाज : 'खाँटी घरेलू औरत'	डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे	034
08.	सूर्यबाला के साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. सिध्देश्वर विठ्ठल गायकवाड	041
09.	हिंदी कहानियों में स्त्री विमर्श	सीमा सुरेश राठौड़	045
10.	समकालीन प्रमुख महिला कथाकारों के कहानियों में नारी विमर्श	डॉ. व्ही.एस. झगडे	048
11.	हिन्दी महिला आत्मकथाओं में चित्रित स्त्री विमर्श	डॉ॰ अशोक मरळे	052
12.	ममता कालिया लिखित 'कितने प्रश्न करुं' खंडकाव्य में स्त्री विमर्श	डॉ. सरोज पाटील	056
13.	नारी विमर्श : मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' के संदर्भ में	डॉ. राजेंद्र पांडुरंग रोटे	061
14.	नारी विमर्श : प्रभा खेतान 'आओ पैंपे घर चलें' के संदर्भ में...	सुभाष विष्णू बामणेकर	065
15.	आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में नारी चित्रण	डॉ.सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	068
16.	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ॰ रशिद नजरुद्दीन तहसिलदार	072
17.	सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में चित्रित नारी	नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	075

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

अक्षर वाङ्मय : ISSN : 2229-4929

सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में चित्रित नारी

नामदेव ज्ञानदेव शितोळे

हिंदी विभाग प्रमुख, सावित्रीबाई कला महाविद्यालय, पिंपलगाव पिसा, तहसिल: श्रीगोंदा, जिला: अहमदनगर

प्रस्तावना :

पुरुष के समान स्त्री भी इस संसार का अभिन्न अंग है। जिस प्रकार स्त्री–पुरुष और प्रकृति का संबंध अटूट है ठीक उसी प्रकार साहित्य का सृष्टि से, इस जगत से अटूट संबंध है। हर सदि में नारी की अवस्था में बदलाव होता आ रहा है इस बदलाव के अनेक कारण है। आधुनिक युग की नारी शिक्षित होने के साथ अपनी अस्मिता को लेकर सोचने लगी है। इसी कारण वह सही को सही और गलत को गलत साबित करने का सामर्थ्य जुटा रही है। प्राचीन काल की नारी परंपरागत मान्यताओं के शिकंजे में जडकर अपने अस्तित्व से ही दूर जाने लगी थी। लेकिन आज नारी शिक्षित होने से अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हुई है। नारी के इस अचेतन अवस्था को 'नारी चेतना' के नाम से अभिहित किया जाता है।

सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में नारी के विविध रुप :

स्त्री इस संसार के संचालन का अभिन्न अंग है। सृष्टि के निर्माण के साथ नर और नारी का भी निर्माण हुआ है। इसी कारण भगवान शिव जी को अर्धनारीश्वर का प्रतिरुप कहा गया है। इस जगती में नारी नर से महत्वपूर्ण स्थान रखती है' क्योंकि नारी से ही संबंधों का निर्माण होता है। इतिहास साक्षी है कि हर युग में नारी पुरुष का संबल बनी है। हर युग में नारी के विविध रुप हमारे सामने आते है।

हर क्षेत्र में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। संसार में पारिवारिक सुख–समृद्धि सबसे महत्वपूर्ण होती है जिसमें नारी की भूमिका सबसे अहम होती है। जिसमें नारी ममतामयी माँ, स्नेनमयी बहन, बेटी, पत्नी तथा प्रेमिका के रुप में अपनी सभी रिश्तों को बहुत ही सुंदरता से निभाती हैं। नारी दया, क्षमा, ममता एवं करुणा की मूर्ति है। सुधा अरोड़ा ने नारी के देवी, माता, पत्नी, बेटी, बहन, प्रेमिका तथा आत्मनिर्भर नारी आदि रुपों का चित्रण किया है।

Savitribai College of Arts
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

प्रेमिका के रुप नारी का चित्रण :

हिंदी साहित्य में प्रेमिका का चित्रण शृंगार रस के संदभ्र विशेष रुप से हुआ है। प्रेमिकाओं के कई प्रकार 'नायिका भेद' कें अंतर्गत किए गए है। प्रेम में प्रेमी वह सबकुछ करने के लिए तैयार हो जाता है जो वह आमतौर पर करने में सो बार सोचता है।

सुधा अरोड़ा 'चरित्रहीन' कहानी में प्रेमी एवं प्रेमिका के व्यक्तित्व पर प्रकार डालती है। कहानी का नायक एवं नायिका दोनों साथ में ही घुमते रहते है। वे निरंतर बाग–बगीचों, झरने, पुल आदि की सैर करते हुए अपने प्रेम को स्थायित्व देना चाहते है। पर दोनों में कसमसाहट होने के नाते अपने प्रेम की परिसीमा तय नहीं कर सकते वह कहती है – ''और लोगों को तो पत्नियों के साथ चलने में शर्म आती है, तुम्हें प्रेमिका के साथ चलने में ही।''[१] नायक वर्तमान में जीने का आदी है पर प्रेमिका भविष्य की चिंता करती है तो वह कहता है – ''तुम भविष्य की इस– उस अशंका से इतनी कौन्शस हो जाती हो कि वर्तमान को भी ठीक से जी नहीं पाती।''[२] दोनों की सोच एवं शैली में अंतर है। दोनो व्यक्तिवादी बनकर जीनेवाले है गार्डन में नो एंट्री का बोर्ड देखकर वह कहती है– ''नो एंट्री के साईनबोर्ड तो यूँ भी जीवन में आना ही है फिर पटले से इनके अनुभव क्यों न हो?[३]

'आग' कहानी की नायिका निगम बहुत प्रेम करती है, उसी के साथ वह शादी तक करने की सोचती है। निगम भी आत्मियतापूर्ण उसके साथ व्यवहार करता है उसके इस व्यवहार के कारण उसे वह प्यार मानती है। निगम के साथ वह शादी के सपने संजोने लगती है जग निगम अपने मंगेतर की तस्वीर दिखाने लगा तो उसका प्रेम टूट जाता है – ''उसे लगा, इन दिनों वह अपनी मंगेतर के बारे में सोचने में व्यस्त है और शायद दूसरी बातों की ओर उसका ध्यान नहीं जायेगा। कोई एक चीज मन को शिद्धत से बांध ले तो आदमी आस–पास का सब कुछ भूल जाता है।''[४]

'एक सेव्हिमेंटल डायरी की मौत' कहानी की नायिका सरिता अपने प्रेम की प्रति एकनिष्ठ है। सरिता का प्रेमी सरिता को त्यागकर अपनी पत्नी के साथ विदेश में में रहता है। सरिता का प्रेमी विदेश में होने बावजूद भी आज भी वह नये साल के दिन क्लब में उसका इंतजार करती है। वह अपने प्रेमी के लिए जीती है वह उसे किसी भी हालत में कभी–भी भूलना नहीं चाहती वह कहती हैं –''वह सरोज के साथ विदेश में हैं। यह सब जानते हुऐ भी मैं क्यों क्लब में उसकी प्रतिक्षा करती हूँ? डायरी लिखकर यह क्यों सोचती हूँ कि उसे खत लिख रही हूँ।''[५]

'स्वप्नजीवी' कहानी में सुधा अरोड़ा जी ने एक असफल एवं आदर्श प्रेम का जिक्र किया है। प्रेमिका और निखिल एक दूसरे से प्रेम करते हैं पर निखिल की यादी किसी और से हो जाती है। फिर भी वह आज तक निखिल की याद में जी रही है। निखिल उसे बहुत समझाता है कि वह ...

Savitribai College of Arts
ID. No. PU/AN/A/58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

का घर बसा लों प्रत्युत्तर में वह कहती हैं – ''शादी इसीलिए नहीं करती क्योंकि मुझे लगता है – तुम्हें कभी तो यह लगेगा कि मेरा जितना प्यार तुम्हें कभीं, कही, कोई कोई भी नहीं दे सकता। तुम अगर तब लौट आए तो?''[६] इस प्रकार प्रेमिका को हर समय स्वीकार करने वो बाध्य नारी का चित्रण हुआ है। पर निखिल का कहना है – ''तुम भ्रम मत पालो, मैं लौटूंगा तो नहीं। मेरा रास्ता तुम तक आकर ही खत्म नहीं होता।''[७]

'उधडा हुआ स्वेटर' कहानी की लडकी अपनी माँ की सेवा में तल्लीन है और वह माँ के सपनों को साकार करने, ब्याह रचने तैयार होती है। अपने ही एक मित्र को चाहने लग जाती है लेकिन इसमें वह असफल हो जाती है। माँ के शब्दों में – ''एक लडका उसे पसंद आया भी पर जब तक शिवा उसे पसंद कर अपने घर का हिस्सा बनाने को तैयार हुई, वह लडका बेटी की ही एक दोस्त पर रीझ बैठा और बेटी को पैरों का एक्जीमा का महीनों इलाज करना पड़ा।''[८] इस प्रकार उसका प्रेम टूट जाता है और वह असफल प्रेमिका बन जाती है।

'घर' कहानी में भी असफल प्रेमिका का यथार्थ अंकन हुआ है। अपने घर एवं परिवार के लिए वह निरंतर पिसती रहती है। अपने बारें में उसनेकभी सोचा नहीं। अपने प्रेी कुशल को लेकर साथ में जीने के सपने थे पर घर के विरोधी–स्थिती के कारण अपने प्रेमी कुशल से दूर होने का निर्णय वह लेती है। वह सोचती है– ''अब केवल ऐसे क्षणों, जब वह भावुक हो गया उदास – कुशल का ख्याल भर आ जाता है। उसकी शक्ल सामने आ भी जाये, तो आँखों में कोई सपना नहीं मंडराता, न ही वही शक्ल उदास करती है, वह मात्र इतना महसूस करती है कि कुछ होना था, नहीं हुआ और जिसे अब होना ही है।''[९]

'इस्पात' कहानी की मित्रा दी असफल प्रेमिका रही है। उसने भी एक प्रोफेसर से दोस्ती की थी पर उसने नहीं माना। इस संदर्भ में मित्रा दी कहती है – ''जब मैंने शादी करने को कहा तो उन्होंने टाल दिया उसके बाद मैंने शादी के बारे में सोचा ही नहीं।''[१०]

'डेझर्ट फोबिया उर्फ समुद्र में रेगिस्तान' कहानी की छवी एवं महेश कॉलेज में दोस्त से ज्यादा प्रेमी रहे। पर कई कारणों से दोनों एक नहीं हो सके। लेकिन बुढापे में आकार दोनों की मुलाकात हो जाती है। उस वक्त महेश अपना परिचय इस प्रकार करवाता है – ''नहीं पहचाना न मैं महेश। कॉलेज में तुम्हारा मजनू नं. वन! तुम भी अब नानी–दादी बन गयी होगी – पोते–पोतियाँ वाली अपने साहब से मिलाओ।''[११]

'भागमती पँडान का उपवास' कहानी की सुमेधा अपने गुरु प्रो. पांडे जी से बेहद प्रेम करती है। सुमेधा के प्रेम के लिए पांडे जी उसको नेट, सेट की परीक्षा पास कराते है। उसे प्रतियोगिता में

Savitribai College of Arts ★ Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar ★
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

प्रथम लाने के लिए कविता, कहानी आदि को खुद लिखकर उसे भाग लेने के लिए मजबूर करते है। अर्थात प्रेम के लिए अपने छात्रा का काम स्वयं पांडे प्रोफेसर करते है। भागमती के शब्दों में – '''अब वो जो जो करतब निभावत रही, उसके बदले ये साहेब लेख लिखें। पी.एचडी की किताब भी छप जाये। ये निबहुरी तो जानती रही कि बस डाम्दर साहब की किरपा.... दृष्टि होय तो उसकी तैयारी में जुट जायेंब स यही कारोबार चौबीसो घण्टा।''[१२] इसी कहानी की भागमती अपने पति के प्रेम को सच्चा प्रेम मानकर बैठी है पर उसका प्रेम असफल बन जाता है – ''वे चाहे जिस खेत पर ले लेकिन प्रेम तो वे बस मुझसे ही करते है। सच तो यह था कि प्रेम किस चिडिया का नाम है – भूलेकर वे सिर्फ और सिफफ नटवर नागर होकर रह गये थे।''[१३]

'युध्द विराम' कहानी में भी सुधा अरोड़ा जी ने असफल प्रेम का चित्रण किया है। कहानी का नायक प्रेम में असफल होने के बाद अपने आपको अकेला महसूस करता हैं – ''तब वे एम.ए. में पढ़ते थे। अठराह साल की थी वह खूबसूरत सी लडकी, जिसमें उनकी समुची दुनिया सिमट आयी थी और उसका जाना वे बर्दाश्त नहीं कर पाये थे चार दिन उन्होंने अपने को उस छोटे से कमरे में कैद रखा था।''[१४]

प्रेम एक अद्‌भूत संवेदना है। प्रेम के सामने सारे नियम, बन्धन फीके पड़ जाते है। पर भारत जैसे बहुजनीय देश में प्रेम जैसें पवित्र संबंध को भी जाति व्यवस्था के सामने झुकना पड़ता है। प्रेम मजहब के सामने असफल हो जाता है। सुधाजी की कहानी 'तीसरी बेटी' के नाम ये ठंडे, सुखे, बेजान शब्द' में महजब ने सुनयना के प्रेम को असफल बना दिया लेखिका के शब्दों में – ''तुझे अपने साथ पढ़नेवाला एक लडका अच्छा लगने लगा था। तुम्हारे सपने एक थे। खुशियाँ एक पर तुम्हारे मजहब अलग थे। हम सबने तुझे घेरा तुझे कभी आँसूओं का, कभी अपनी ममता का वास्ता दिया, मजहब बहुत बड़ी दीवार है, समय के रहते जित जा।''[१५]

प्रेम में एक अलग ही प्रकार का आकर्षण होता है। उस क्षणिक आकर्षण के पीछे इन्सान अपने परिवार से मुँह मोड लेना है। जिस परिवार ने उसे पाल–पोसकर इतना बड़ा किया उसी को वह त्याग देने के लिए तैयार हो जाता है। वह प्रेम की छाया में बंधा चला जाता है। उस प्रेम में ऐसी कौनसी शक्ती है इस पर चिंतना होना चाहिए 'यही कहीं था घर' उपन्यास की नायिका चित्राके प्रेम की भनक जब उसके पिताजी को लगती है तो वे कहते है – ''इसी दिन के लिए लिखाया - पढ़ाया था तुझे? मुनिया की अम्मा और भेजो बेटी है जो ठाकूर की बेटी पंजाबी लडके के साथ इश्कबाजी कर रही है।''[१६]

Savitribai College of Arts
ID. No. PU/AN/AJ 58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

दिवाकर के प्रेम में घुल मिल गयी चित्रा अपने परिवार को छोडने के लिए तैयार हो जाती है उसे पता है कि एक बार घर से निकलने पर दुबारा लौटना मुश्किल है। फिर भी उसने कदम उठाया और दिवाकर को अपनाया। इस प्रकार प्रेम एक ऐसी वस्तु है जिसने प्रेम में गौता लगाया उसे डुबने के संकेत होने पर भी संभल नही पाया। चित्रा की स्थिति ऐसी ही रही है। प्रेम की खुमारी में रही चित्रा का यह प्रेम चार साल के बाद दम तोड़ने लगा। उसका प्रेमी दिवाकर अब उसका नहीं रहा। उसका प्रेम अब असफल प्रेम का रुप धारण कर लेता है। चित्रा सोचती है – ''शादी से पहले चार साल की कोर्टशीप और उन चार सालों का मेरा दोस्त, प्रेमी, साथी दिवा शादी के एक साल बाद ही दीवाकर मल्होत्रा के विराट नाम के तले गुम हो गया। इधर मोनु पैदा हुआ, उधर दिवा के बचे खुचे अवशेष भी धुंधले होते–होते पुरी तरह मिट गए । मैंने इस आदमी में, जो मेरा पति हैं, इस दिवा को, जिससे मैंने प्यार किया, ढूँढने की बहुत कोशिश की, पर हमेशा नाकाम रही।''[१७]

प्रेमिका के मोटभंग का चित्रण सुधा जी ने अपनी कहानी 'सत्ता संवाद' मे बखुबी किया है। इस कहानी की नारी अपने प्रेमी से विवाह करती है। शादी के बाद जिस खुशहाल जीवन का उसने सपना देख था वह टूट जाता है। पति लेखक होने के कारण उसे हजारों प्रेम पत्र आते रहते है। उन प्रेम पत्रों को देखकर वह कहती है – 'मैं भी कितनी पागल हूँ। यह सब मैं कह रही हूँ। मैं .... जो खुद इतनी पागल थी। आज से पच्चीस साल पहले .... याद करुँ तो दिल दहल जाता है। तुम्हारे प्यार में मरने –मिटने पर उतारु थी। लगता था, दुनिया का हर रास्ता फिर्र तुम तक जाता है।''[१८]

सुधा अरोड़ा की दृष्टि समाज सापेक्ष होने के नाते आपने नारी के विभिन्न रुपों का यथार्थ चित्रण किया है। आपके कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी सभी क्षेत्रों में अपने भविष्य को स्थापित करने की आस रखकर समाज में उतरी है ऐसा नजर आता है। वह हर समस्याओंका सामना कर अपना पथ आलोकित कर अग्रसर होती दिखाई देती है। ऐसी नारियोंका चित्रण कर के सुधा अरोड़ा जी ने अपने कथाकार होने का कर्तव्य को बखूबी निभाया है। यही एक सफल कथाकार की उपलब्धि भी होती है।

Savitribai College of Arts ★ Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar ★
ID. No. PU/AN/A/ 56/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

संदर्भ :

१. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'चरित्रहीन' पृष्ठ.सं. ११४
२. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'चरित्रहीन' पृष्ठ.सं. ११४
३. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'चरित्रहीन' पृष्ठ.सं. ११४
४. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'आग' पृष्ठ.सं. १३६
५. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'एक सेण्टिमेंटल डायरी की मौत' पृष्ठ.सं.४०.
६. कांसे का गिलास – सुधा अरोड़ा, कहानी 'स्वप्नजीवी' पृष्ठ.सं. ११५.
७. कांसे का गिलास – सुधा अरोड़ा, कहानी 'स्वप्नजीवी' पृष्ठ.सं. ११५.
८. बुत जब बोलते है – सुधा अरोड़ा, कहानी 'उधडा हुआ स्वेटर' पृष्ठ.सं. २०
९. बगैर तराशे हुए – सुधा अरोड़ा, कहानी 'घर' पृ.सं. १५०
१०. कांसे का गिलास – सुधा अरोड़ा–कहानी 'इस्पात' पृ.सं. १३१
११. २१ श्रेष्ठ कहानियाँ, सुधा अरोड़ा–कहानी 'डेझर्ट फोबिया उर्फ समुद्र में रेगिस्तान' पृ.१८०
१२. बुत जब बोलते है – सुधा अरोड़ा–कहानी 'भागमती पॅडाइन का उपवास' पृ.सं.११०
१३. बुत जब बोलते है – सुधा अरोड़ा – कहानी 'भागमती पॅडाइन का उपवास' पृ.सं.११५
१४. रहोगी तुम वहीं – सुधा अरोड़ा – कहानी 'युद्धविराम' पृ.सं. ४३
१५. काला शुक्रवार – सुधा अरोड़ा कहानी 'तीसरी बेटी के नाम – ये ठंडे, सुखे, बेजान शब्द – पृ. सं. १२९
१६. यही कहीं था घर (उपन्यास)– सुधा अरोड़ा – पृ.सं. १४९
१७. यही कहीं था घर (उपन्यास) – सुधा अरोड़ा – पृ.सं. १५०
१८. एक औरत तीन बटा चार – सुधा अरोड़ा, कहानी 'सत्ता संवाद' पृ.सं. ३४.

Savitribai College of Arts
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999
Pimpalgaon Pisa Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar